12-12-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

किसको बाबा बच्चे कहते है और किसको माईया कहते है। जरूर कुछ तो फर्क होगा। कोई की सर्विस से खुशबु आती है। कोई तो जैसेकि अक्क के। यह तो बाप ने समझाया है कि तुम जैसे हमारे साथ आये हो ऊपर से। बाप भी आये है विश्व को मालिक बनाने के लिये तुम्हारा भी यह ही कर्तव्य है। वहा से जो पहले आते है वो तो जरूर ही खुशबु देते होंगे। बगीचे से भी भेंट करते है ना। जैसे सर्विस वैसा खुशबु दार फूल भी। विवेक भी कहता है कि शिव बाबा का बच्चा कहलाया तो हक्क दार भी बना। तो वो खुशबु भी आनी चाहिये। हक्कदार है तब तो सबको नमस्ते करते है। तुम विश्व का मालिक बेशक रहते हो किन्तु पढ़ाई में फर्क तो बहुत रहता है। यह तो होना भी है जरूर। बच्चो को तो निश्चय हो जाता है कि यह बाबा है और चक्र भी बुधि में आ जाता है। तो बाप कहते है कि और जास्ती क्या पढ़ाते। बाप के सिवाए और कोई भी स्वदर्शन चक्रधारी बना ना सके। बनते भी है तो इशारे सेक। जो कल्प पहले बने है वोही बनते है। ढेर के ढेर ही बच्चे आते है। पवित्रता के ऊपर कितनी अत्याचारी होती है। कितना ही डरते है। जिस के द्वारा बाप गीता भी सुनाते है। फिर इनको गालियां देते है। उनको तो गाली लगती नही है। बाप कहते है कि जब बहुत गाली देते है कच्छ मच्छ अवतार कह देते है तब मैं आता हूं। ना जानने कारण बाप पर और तुम्हारे पर कितने ही कलंक लगाते है। कितने बच्चे माथा भी मारते है। पढ़ाई मे कोई तो बहुत शाहुकार हो जाते है और वो कितना तो कमाते है। एक एक आपरेशन में दो दो तथा चार चार हजार मिल जाते है। कोई तो कुटुम्ब की पालना भी नहीं कर सकते। फर्क है ना। कोई जन्म-जन्मान्तर लिए बादशाह बनते हैं, कोई तो जन्म-जन्मान्तर लिए गरीब बनते हैं। बाप कहते है तुमको कितना समझादार बनाते हैं। अभी तुम सभी बातों में कहेंगे ड्रामा हैं। सभी का पार्ट हैं। जो पास्ट हुआ ड्रामा। होता वही है जो ड्रामा में हैं। ड्रामा अनुसार जो कुछ होता है ठीक हैं। कितना भी हम समझावें समझते नहीं हैं। इसमें मैनर्स भी अच्छी चाहिए। हर एक अपने अन्दर में देखें कोई खामी तो नहीं हैं। माया बहुत कड़ी हैं उनको कैसे भी कर के निकालना हैं। सभी खामियां निकालनी हैं। बाप कहते हैं बान्धेलियां सब से जास्ती याद में रहती हैं। वह ही अच्छा पद पाती हैं। जितना मार खाती हैं उतना जास्ती याद करती हैं। हाये शिव बाबा निकलेंगा। ज्ञान से शिव बाबा को याद करती हैं। उन्हों का चार्ट अच्छा रहता हैं। ऐसे जो मार खाकर आती हैं वह सर्विस में अच्छी लग जाती हैं। अपना जीवन ऊंच बनाने लिए अच्छी सर्विस करती हैं। सर्विस न करें तो दिल खाती हैं। दिल टपकती हैं हम जावें सर्विस पर। भल समझते है सेन्टर छोड़ कर जाना पड़ता हैं परन्तु प्रदर्शनी में सर्विस बहुत हैं। तो सेन्टर का भी प्रवाह न कर भागना चाहिए। जितना हम दान करेंगे उतना बल भी हमको मिलता रहेंगा। दान भी जरूर करना हैं ना। यह हैं अविनाशी ज्ञान रत्न। जिनके पास होंगे वही दान करेंगे। बच्चों को बाप को बैठे हुऐ देखने से सारी सृष्टि के आदि मध्य, अन्त का ज्ञान आ जाना चाहिए। सारा चक्र फिरना चाहिए। बाप ही इस सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानने वाला है। जरूर ज्ञान का सागर है। सृष्टि चक्र को जानने वाला है। यह दुनिया के लिए बिलकुल ही नया ज्ञान हैं। जो कब पुराना बनता ही नहीं हैं। वन्डर फुल नालेज है ना जो बाप ही बताते हैं। कोई कितना भी साधु महात्मा होसीढ़ी का ढाका उपर जाता ही नहीं। सिवाए बाप के मनुष्य गति सदगति दे न सके। न मनुष्य न देवता दे सकते हैं। सिर्फ एक बाप ही देते हैं। दिनप्रति दिन वृधि होनी ही है। बाप ने कहा था प्रभात फेरी में यह ल०ना० का चित्र, सीढ़ी का चित्र, ट्रन्सलाईट का भी होना चाहिए। बिजली की कोई ऐसी चीज़ हो जिस से चमक आती रहे। सलोगन भी बोलते जाये। सन्यासी कब राजयोग सिखाये न सके। राजयोग एक परम पिता परमात्मा ही सिखाये रहे हैं भागिरथ द्वारा। ऐसी2 बहुत आवाज़ सुनेंगे। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

-: ****ओमशान्ति****: -